

इ. वि. का. राजवाहे संशोधन मंडळ घुळे.

—: इति २०१० ग्रन्थालय संग्रहः—

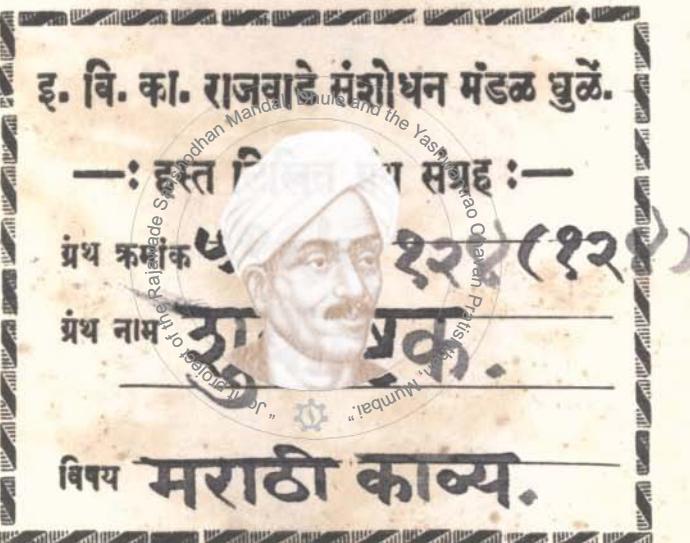
ग्रन्थ क्रमांक ५

ग्रन्थ नाम शास्त्र

२२४ (१२४)

क.

विषय मराठी काव्य.



(1)

॥ श्रीगरोदायनमः ॥ श्रीरामचंद्रप्रसंब्रह्मीकृष्णायनमः ॥ श्रीशुकालिका  
 उङ्गनमोजीजगद्गुरु ॥ नदिसोनिजगदाकारु ॥ देखिलासितरिसंकारु ॥  
 ॥ शुक ॥ नमोउत्तांकरिसी ॥ १ ॥ परिहेत्वेहि ॥ रणेतुजलागुनी ॥ यातागिनभुनि ॥ आ  
 राहवेंस्थिर ॥ २ ॥ तवेनमुद्गु ॥ ॥ वेगवपेंथिता ॥ तरिनमावया  
 जाता ॥ कवराहेतु ॥ ३ ॥ उथ शुर्योभरिते ॥ स्वयेकरीतरियातैतेगं  
 गेव्याहैसेअद्वैतें ॥ नमावयाकाकृते ॥ ४ ॥ तियेवावोहट्चढी ॥ तरि  
 मासिवाढिमोडी ॥ तैसीनमाव्यापरवडी ॥ तुस्तिचितुतें ॥ ५ ॥ तैसातुजा  
 पूर्णपणी ॥ असोनिपरिनवरोधणी ॥ इणीनिगावयातुजागुणी ॥



Digitized by  
 srujanika@gmail.com

उरितहोयं॥६॥ मौनपेवान्या॥ तरिसेष सिसाचा॥ माभेठोनि की  
र्तनाचा॥ लविसि न्याका॥ ७॥ तुझीजे रिहोय अब्यंग॥ तरिमौनप  
उभभंग॥ तेगोडि न्यावोघा—रेखो॥ ८॥ तें अपूर्वकोऽधिष्ठ  
फलदेखिलेश्व्रेष्ट॥ जें नित्य रविद्या॥ तेचिश्वकसेवी॥ ९॥ तेशु  
कसुखिन्चेअष्टक॥ जेगुद्युक्ता॥ १०॥ वदवितसेव्यापक्तजनार्द  
नुवाचे॥ ११॥ तोजनार्दनुवाचेसारसा॥ गोडिमाझीस्वादुजेसा॥ कां  
नदिसोनीजसेकैसा॥ सुमनीं वास्तु॥ १२॥ तोयकाँनाममिसे॥ आ  
पणयां आपणगातु असे॥ तेनिरति चेनिसोरसे॥ परिस्तुओते॥ १३॥

२

१



Rajasthani Sanskrit  
Professionals Mandir, Dhule and the  
Bharatiya Vidya Bhawan, Mathura

(2A)

द्वे अत्मानुभविचे हिवे ॥ कि सोहं सिद्धि चेटेवे ॥ तेस हुरुनें भेटवावे ।  
नित्यश्रोते ॥ १३ ॥ ये बिनवणीं सवें ॥ अवलो कि लेछ पावै भवें ॥ तं च स बाह्य स  
सिं जाघवे ॥ विवक्षेणै क्य ॥ १४ ॥ गात्रा अहु क मिसें ॥ याचे वो सिंगास म  
रसे ॥ वै सो निब्रोहेन ऐसे ॥ मन निवे ॥ १५ ॥ याला गिजी हुरुदेवा ।  
पे लिछपे वाहेलावा ॥ त्यावान् श्री महें वा ॥ त्रार्थनें न लगे ॥ १६ ॥ ये वि  
नवणी सवे ॥ अवलो की लेछ गाव गते ॥ तं च स बाह्य सीं आघवे ॥ विव  
क्षेणै क्य ॥ १७ ॥ तो विचै क्य इन्विवेकु ॥ पदपदार्थी श्री शुकु ॥ बोलिला  
शानविवेकु योगीयांचा ॥ १८ ॥ श्री शुकु कौवाच ॥ भेदाभेदो सपरिगढितो ॥

(3)

सुप्य पापे विक्षिर्णे ॥ माया मोहौ क्षय मधिगते नष्ट संदेह वर्ति ॥ शङ्ख  
 तीतं त्रिगुण रहितं प्राप्य तत्त्वावबोधं ॥ निष्ठै गुण्ये पद्धि विचरतां को  
 विद्यिः को निरोधः ॥ १ ॥ औस्त्वात् प्रभू विक्षंदा ॥ ज्ञान पूर्ण न रेद्य ॥ तोशुक यो  
 गेद ॥ आपुलि स्थिति बोले ॥ २ ॥ स्थिति च न क्वावी ॥ तेण स्वरूपन्या  
 हाली ॥ त्या अनुभवाच्च उक्ति संख्यिशुक्ति ॥ ३ ॥ स्मणे भेदा भेद दो  
 न्हि ॥ हारपले ज्यापा मुनी मर्ति न नैनथनी ॥ न संपैं होहीचा ॥ ४ ॥  
 तरि अर्खं उभेदु कैसा ॥ अभेदाच्च कवरगायसा ॥ होहि वेगविद्वान् ॥ विलक्ष  
 णते ॥ ५ ॥ तंतुयक्ति वटवरि ॥ परिदिसति वेगवाल्या हारि ॥ गणिताये

२



"Joint Project of the Barishaliade, Galsodhar, Marjel, Dhule and the Rashwantrao Chawan, Rashwantrao Chawan, Mumbai".  
 "Joint Project of the Barishaliade, Galsodhar, Marjel, Dhule and the Rashwantrao Chawan, Rashwantrao Chawan, Mumbai".

त्रैसे अरवंडाचाटाई॥ न्तीतिमनात्रमतेपाहिं। मगदेखेसिन्दकही॥ तोयिभेदु॥

(3A) लिखक्षवरि॥ तोपटखभेदु॥ २३॥ मुक्काचीयेगोरि॥ गुव्व अबेवाजि  
तरि॥ हेनेणोनिब्याइरि॥ तो अरेदखतिभेदु॥ २४॥ हीपकछिकायेक अ  
से॥ तिमीरहषि अनेकहिसे॥ नतं अभासे॥ वस्तुचायही॥ २५॥ अः+  
जैसेमरगांभजनि॥ भासेप्रखदु  
ने॥ तं साच मानलेमनि॥ महणो  
निदृष्टभेदु॥ २६॥ अपलपायेक  
सरे॥ स्वप्रियियानिद्राभरे॥ अने  
कखाचेमोहिरे॥ भोगिजीउ॥ २७॥ अपलानिद्यस्यभावे॥ नेणोनिवर्तेजे  
स्यभावो॥ तेंविषेनिर्वाहोभेदवाक्याचा॥ २८॥ दृश्यप्रभव अघवा॥ मा  
वव्वेनियेप्रहुतिस्यभावा॥ काश्मिरी-स्यागांधुतमज्जन॥ २९॥ औ

ये

सिप्रहतिं चिं रवों पै॥ भुत क्रि यालोपे॥ परि ने दा चे जाउपे॥ तै सा जि वें ची॥ ३१॥

समस्त ब्रह्मा दृशि॥ सो हंया भजे दृति॥ ते हि मावच्छ नि स्फूर्ति मग जें डेरे॥ ३२॥

जवचा भेडु सबळ॥ अविद्या भे रे रे ठ॥ दो न्ही जाउ नि के वळ॥ ते भजे दा तित॥ ३३॥

३॥

जे क्हा भेडु च नाहि॥ ते क्हा अ भेडु॥ परि चिन्मात्र जे काणी॥ ते उभयाति

या

त॥ ३४॥ शान नि परि प्राणी॥ सो शान नृष्टी॥ ते हि गे लिया पाणी॥ अ

भजे दा तित॥ ३५॥ औ से गे लिया भरा भर के वळ नुरे जे शुद्ध॥ ते चि पै विशद

खृकरू॥ ३६॥ परमात्मा परं जोंति॥ परब्रह्म परशि॥ परात्पर प्रहृति परावर

जो॥ ३७॥ अज आद्य अचवळ॥ अस्त्र अक्षर अठवळ॥ अजरा मूर अमळ॥

(१)



Portrait of a sage, likely Kshewar, mentioned in the manuscript.

With profile of the Rajawade Panshotra Mandal, Dhule and the Kashwanwary  
Caravan caravan, Maroda, Maharashtra, India

(५८)

अनादिजो ॥ ३७ ॥ निर्विकारनित्यनि: प्रपंचनिर्मिथित ॥ निष्कर्मनिजसत्य  
 सत्यमृति ॥ ३८ ॥ निःष्टनिष्कामा ॥ निर्गुणनिरूपम् ॥ निःसंगनिवीम् ॥ निजानं  
 श्रुक ॥ ३९ ॥ स्वामात्मयंजोति ॥ स्वलित्तत्त्वात्मप्रतीति ॥ आत्म  
 खाचि ॥ ४० ॥ ऐसा अद्वयरक्तहरे संचलयापरि आंगेजाला ॥ ॥  
 भेदभेदातीत ॥ ४१ ॥ तदिनादतो ॥ तो ब्रह्मनेदखतनादे ॥ आपुले नि  
 स्वात्मपद्मुल्लास्तु ॥ ४२ ॥ तो आङ्गारनविकारे ॥ त्यान्वेनासीनसरे ॥ अ  
 धिष्ठानप्रतीतिभरे ॥ अखंडजाला ॥ ४३ ॥ महत्तदिघउमोउ ॥ हेत्यासिनलगे  
 ओढी ॥ जैसीस्त्रग लघाचीसंकडी ॥ नपेउ सुर्यासितरतां ॥ ४४ ॥ तैसे भेद



Rajawali Sanskrit Mandal, Dhule  
 Project  
 Sanskrit  
 Bhawantrao

(5)

भेदन्येलाग्नेसीवतीयान्येअंग॥ हेदोन्हितेधेमारपोनिगेले ॥४६॥  
 सुणोनीतेणेयेकलें॥ सपदिभेदानेदगीकीले॥ आपरापेनिवर्तीले॥ चिम्ब  
 न्मयनीत्य ॥४७॥ यात्नागिपाप—जान्हि॥ नदेखेनाईकेकानी॥ स्वनीचे  
 रविमहणनयनी॥ जागतानांढी खद्योततेजनयनी॥ काँतारामका ॥  
 इगगनी॥ हेदापतीहोन्हीसूर्यप्र ॥४८॥ तेसापापाचाकचभा॥ काँ  
 पुष्पफुलझेभा॥ मावक्तिस्वयमादेष्यानिहोन्ही॥४९॥ अनादिअविद्या  
 पाढोजीवापास्तुनजालामोढो॥ जेणेमिथ्यासंहेढो॥ भवबंधकेला॥५०॥  
 प्रतिविंबआभासे॥ कायरविजलिंबुउतअसे॥ किलहरि चेनिकासाविसे॥



Rajawade Sandesh Mandal, Dhule and the  
 author of the book

(5A)

शतरवंडदेईल ४७ तैसेंसाद्विवेअसोनियासी॥ मायामोहप्रकाशी॥  
 डेसीमाव्यासांपपणासी॥ प्रकाशकजाली ॥ ५३॥ यापरिमोहमाया स्पर्शलीना  
 हिंतया॥ हेचिद्दृष्टीपाहवया॥ ४८॥ जैसीरूपासीहाया वेगव्यी  
 ॥ शुक०॥ नदेज्यान्धीतया॥ तैसीअसीर्गे॥ रूपर्शीलीनाही॥ ५५॥ रूपाचेनियो॥ ५६॥  
 गें॥ छायाकमीद्देवेगे॥ तैसीअवस्थानीधरीतीछाया॥ वेसंगो॥ मायान्वेष्ट॥ ५७॥ ऐसीमिथ्या  
 चिमाया॥ नाशुभरोगानीधरीतीछाया॥ तैकष्टचिजातीवायां॥ भ्रांताचे॥ ५८॥  
 नासाविमिथ्यामाया॥ तरिजाणांवेचेष्टवितङ्ग॥ याचिलागिआचार्या॥ मं  
 तसेविजे॥ ५९॥ यागुरुवाक्यस्थिति॥ स्वरूपान्वीप्राप्ति॥ निखिलसर्वत्र



Sage Shashikantha  
 Saishikhan Mandal, Dhule and the  
 surrounding areas  
 (Sahajwadi)

(6)

तितीआत्मत्वाची॥६९॥ जेकाजगेसीमाया॥ नदिसेनिकोटेदिसावपा॥  
जैसेव्याकृत्वरुत्तावया॥ नातव्लत्तगेते॥७०॥ आणिमीपणाचामोहो॥ पा  
मीपणांसीयावो॥ यात्वागिमोहावाचिर्वाणी॥ सकुंबरेशाधिः॥७१॥ लै  
सींमायामोहोहोळिं॥ होतीअ रुवी॥ तेंगेलियांमावचोनी॥ जा  
रतीवस्थे॥७२॥ आणिसंदेशां  
देशाआले॥ नष्टखकैसे॥७३॥ नोडहेअंती॥ हेभांतिगर्जिचिव  
स्ती॥ तेसगर्जितभातिसतीजाली॥७४॥ गुधसत्वाचिआरणी॥ गु  
रुवाक्यहृष्मथुनी॥ प्रदित्पुज्यावा आग्नी॥ निर्धुमजो॥७५॥ तेशें  
पंचमुताचिकाणे॥ रजतमध्यतेंसिस्तगाणे॥ पेटविले गोमेणे॥ विश्वकुंड॥७६॥



Portrait of Balwade Seishodhan Mandlik, Chhatrapati Shivaji Maharaj Library, Mumbai, India.

(6A)

तयाकुंगवाचुनीभांती ॥ ठावनाहि मगजाहीसती ॥ तेथेसंदहस्तिती ॥ निः  
 वेशनासे ॥ ६७ ॥ यातागिसंदेहदरति ॥ जाहिनिः संदेहप्रतीति ॥ मगवो  
 त्रुक् ॥ तलीसंदेहस्तिती ॥ अंक्षररसे ॥ ६८ ॥ जेनकेशद्वासाकेउ ॥ देखिलेत  
 रिनसंगवेफुउ ॥ जेवेदासीडेकु गोढतापउलें ॥ ६९ ॥ जेजाणितल्या  
 हिविशद ॥ परिनसंगवेयेवं विध शद्वातीत तेशुधाकेवळपै ॥ ७० ॥  
 वेदुकायनेणतांपरतला ॥ जाणो ॥ रंगवेबोला ॥ यालागुनीठेला ॥ नेति  
 ल्यणोनी ॥ ७१ ॥ जेडेरखनावर्तुल ॥ कृशनाएथुव ॥ स्तिरनांच्येचळव  
 र्णरहित ॥ ७२ ॥ मूर्तेनाआमुर्तेप्रगङ्गनागुत्य ॥ भोक्तेनाअम्भोक्तेसर्वेदृष्टे ॥ ७३ ॥



"Portrait of the Paliade Sanishodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Paliade Sanishodhan Mandal Member" - Joint Project of the Paliade Sanishodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Paliade Sanishodhan Mandal Member"

(7)

ना संनीधौदुरीबाद्यनाअंतरी॥ निर्धारानिर्धारीधीरुनहे॥ ७४॥ आहीनांअ  
 तमनबुध्धीअचिंत्यसर्विसर्वात्माअनंतुनांदे॥ ७५॥ जोक्षणुनहेवेगवा॥  
 नांदताहेतिक्षा। जगचियेकुझेक्षा। स्त्र॒ पञ्चाचे॥ ७६॥ जोतेजायिदि  
 व्यदिप॥ देखतांचिमनमूर्दि  
 जोनाक्षेसंकल्पा॥ तोकेविअ  
 नयेचिबोली॥ ७७॥ अबवळपुसेखुवतिसी॥ कांतसुखरांगेमडपासी॥  
 तेशद्वनयेतिव्यक्तिसी॥ भोग्निल्याविना॥ ७८॥ तैसिशहातितबोली॥ अनु  
 भवासिन्वटीकेली॥ वाचुनबोलावेबोली॥ ऐसेनोहे॥ ७९॥ ज्यामाझीगगन



Prof. Rajivade Sa Shishhan Mandai, Dhule and the  
 Vachantra  
 Gurav Prof. Rajivade, Member

(३८)

विरें॥ तेथेंशहकोठेंसरें॥ परीकेवळजंडरे॥ तेशह्वातीत॥ १॥ आणिहोघा  
 येकखाय॥ तोहि जेभेविरोनिजाया॥ याहिवरीजेहोयतेंगुणातीत॥ २॥ दों  
 काढाचियघसणी॥ माझीउधीजम्हा॥ दोहीतेजाळुनि॥ आपणहिशमे॥ ३॥  
 मगकाळनावन्हि॥ भस्महिजाय तेल्हानिवि-कारहोनीराहेनभा॥ ४॥  
 तेसेंरंजतममांगंपुढें॥ जालुनिस ठें॥ तयाहिवाढिमोउआपेआप॥ ५॥  
 मगगुणनांकर्मकुव्वनांधर्मे॥ उल्पनक्रसुहोउनीयाके॥ ६॥ मगआपुलि  
 यासता॥ होयगुणकर्मवर्तविता॥ वर्तेनिअलित्पता॥ नभान्याईसि॥ ७॥  
 मर्दपदार्थीव्यास॥ असोनिनभाअलित्प॥ तेसगुराकमीवर्तते॥ गुणातीत

(४)

त्रकाशत्रकाशतत्वाः परित्याचेनि  
 होउनि ॥ ८६ ॥ येवं गुणा तितसद्गावा ॥ त्यांचेनि त्यासरे वांद्ये पवेना ॥ ८७ ॥  
 जाळ जोई द्रेखेकवी ॥ तोइतरा तें मोहवी ॥ परिते विद्यान भुलवि ॥ रवेकवित  
 या ॥ ८८ ॥ तैसातत्वान्वमेका ॥ र्यान निष्ठकाशे सो ल्ववा ॥ मां त्याके विव  
 केबक्को जाणीत लें जाय ॥ ८९ ॥ त्याद्य सुध्य ॥ स्वयें चिजाते विलु  
 ध ॥ प्राप्ततत्वाव बोध ॥ ऐसाडे ॥ ९० ॥ हो यात्रि गुच्छातीनि वा  
 या ॥ येकिउ झुद्दो निह अक्काया ॥ इति विघ्निशोध चोरया ॥ घालि घाता ॥ ९१ ॥  
 त्यातत्वाव बोधें सपाया ॥ मोडुनिने केल्याराजवाया ॥ मगरा मराड्याचे  
 चोहठां ॥ धेउं पिटे ॥ ९२ ॥ तेक्काविघ्निशोध होन्हि ॥ पाहतान हिसेति म

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

(८४)

दोयेकपणेकेविनादे॥ तेंप्रतीतीचेनिप्रबोधे॥ किजेलविशद॥ १॥ परिकु  
 ष्ठिचेकुव्हदैवद्॥ किपंचात्यतनीचेदेवत॥ खासद्गुरुचेमनोगतम  
 नामाजीकैसें॥ २॥ खाचेनिपादप्रसादे॥ श्रोतेआपहोतुआत्मवे  
 धे॥ तिहिभाधीष्ठिलावेदे॥ ३॥ लै॥ ४॥ जेसुखाचेचिनिस्तिव  
 वोतिवनिखनिर्मिळ॥ तेश्रेतिम् गेप्रवल॥ आवधानहेतु॥ ५॥ खा  
 चियाअवधानासवे॥ परब्रह्मसंभवे॥ याहिदिघलेनिरंवेवे॥ नवरस  
 वोव्हे॥ ६॥ श्रोतयाचेमननिवे॥ ऐसेवकृत्वकैचेसंभवे॥ परिगोउकर  
 निपरिसावे॥ संतजनी॥ ७॥ बाव्हकआणिवोवडे॥ तेपरिसत्तांमत्तेसीप्रिलि

६

(9)

नीनवनी॥ जे उतेपाहे अवलोकुनि॥ तै उतेनिरावधी ब्रह्म॥ ९६॥ मिनली  
 मां सत्पउरधी॥ उरिनुरेनिरावधी॥ तैसियेसत्परूपपदी॥ विलासतुअसै॥  
 तैयसन्मुखना पाठमौर्ये॥ किञ्चलेलोहं तैचेभुरेयै॥ सबेत्रसर्वदहेण॥ ९७॥

शुक्री॥

तैथनिद्रानाजागणे॥ बैसपोन  
 त॥ ९८॥ तयासिविधी कैसाआ  
 हेतुमियेकु॥ ९९॥ विधीलागिद्दे

॥ सबहजस्यभावेअसणे॥ सदोही  
 श्रीधींहेजावेकाय॥ जेपाहे तैआ  
 निधिंत्याजणे॥ हेनुरेविब्रह्मपणे॥ शे  
 ब्रह्मलत्यासी॥ १००॥ सातुनीत्रिगुणमार्गी॥ विचारजेयेब्रह्ममार्गी॥  
 तरिविधीनिशेधालग्गी॥ नुरेविवस्तूवावेगलेण॥ १॥ वस्तूत्वावेअसे

मालेश्वरेश्वरीज्ञानी॥



"Joint portrait of the Peshwade Shashodhan Mandir, Pune and the Yashwantrao Chhatrapati Shahu Library, Mumbai".

आ॥०

चूठे॥ यालगिमाज्ञियेबउबेते॥ त्रायजाली॥८॥ वाचुनिपदपदा॥ धर्मचार्य  
 श्रुति॥ मिकेविबोलावयासमृश्ये॥ परिवान्वेसि श्रीछलष्णनाथु॥ बोलुनिबोलेः॥  
 शुक० संतान्वेनिसौरसें॥ जनाईक्षपातोरसें॥ येकाकिं प्रवेशो विहानंदरसी॥९॥ आ०॥  
 पदापदाधर्मीन्वीबोल॥ सप्त्रेमावेबे लकिसखोल॥ जाणतिश्रोते॥१०॥  
 तंवसंतत्मरातीतुगा॥ नसुच्चंसा॥ निरोपण-चालविवेगा॥ येकुरसा  
 चे॥११॥ यालगिश्लोकाधीलगान्॥ लीचित्ते॥ तेसाउनिपरिहाराते  
 बोलेन को॥१२॥ यासंतान्वेनि बोलें॥ चौमुरणे ब्रेमजालें॥ जैसे रंक्षर  
 आलेराणि वेचें॥१३॥ आतां स्वामीनवेका अवधान करायेक मुरवे



(१०)

कैसे बोलिला श्रीशुक ॥ वस्तवि स्तारा ॥ १५ ॥ वस्तवि सीये कपणे ॥ सर्वत्रै  
 कनादणे ॥ तौचिपै निरोपण ॥ नीरो पिजेल ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ यद्वास्मानं सक  
 लव्यु ॥ षामेक मंतर्ष हि स्थं ॥ हृष्ट्रापूर्णरवगमिव सततं सर्वभांउस्थमे  
 कं नान्यकार्यं किमपिचतः ॥ १७ ॥ द्विन्द्रस्त्रपं ॥ निख्नेणुण्ये पथिविच ॥ १८ ॥  
 तां कोविधीको निषेधः ॥ १९ ॥ यि ॥ प्रसासक कवदे हिसबाह्यपरिपूर्ण ॥  
 पाहि ॥ व्यावचुनि रतेनाहि ॥ चरापद्मस्तुष्टिम् ॥ २० ॥ तिहिकावसाहिरुतु ॥  
 कोणे गई रितानकहु ॥ परिपुर्ण सतंदु ॥ स्वप्र कासे ॥ २१ ॥ व्यक्तिमाजि  
 असणे ॥ परितीसंवेनाहि होणे ॥ नासलियाराहाणे ॥ अनिष्टरस्त्रणे नि २२ ॥



(10A)

घठति अभासे ॥ गगनघटकरेदिसे ॥ परिघयसबाह्य असे ॥ घ  
 यहुनिपुर्वि ॥ २७ ॥ निर्विकारपेकगगन ॥ मधिदिसेचतुष्कोण ॥ घटिव  
 तुक्लवन्धन ॥ आकारवीकार ॥ २८ ॥ नघमयनसति ॥ परिअकाशसह  
 जास्थिति ॥ तेस्याभलिनानद ॥ अग्रस्थितिसंचलि ॥ २९ ॥ यात्र  
 सद्दृष्टिपांहि ॥ कार्यमात्रवेगचेन ॥ तीरीठकुंउलकंकणपांहि ॥ हैमंजै  
 से ॥ २३ ॥ कारवळचंचळविरपाठ ॥ परिते केवळजळ ॥ अपार्षी आ  
 स्याज्ज्वापरि अग्निवित्ते ॥ २५ ॥ तरंगलहरिभंवरें ॥ तोयचभासेतहाका  
 रे ॥ तेसासर्वयक्ति आकरे ॥ भासेनिर्विकार असा ॥ २६ ॥ याचि अनु



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)